Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

शान्ति रविवार 2019

आराधना के लिए मार्गदर्शिका

एमडब्ल्यूसी पीस कमीशन के द्वारा 22 सितम्बर 2019 की आराधना के लिए तैयार की गई मार्गदर्शिका

1. मूल विषय और शास्त्रपाठ

अ. मूल विषय:

शान्ति जो सारी समझ से परे है

...

ब. इस मूल विषय को क्यों चुना गया:

नेलसन मण्डेला ने कहा है, ''कुछ कार्य उस समय तक पूरी तरह से असम्भव प्रतीत होते हैं जब तक वे पूर्ण नहीं हो जाते।'' मेल/शान्ति का हमारे द्वारा पीछा किया जाना कभी कभी अवास्तविक प्रतीत होता है। कभी कभी हम यह कल्पना नहीं कर पाते कि इसे हम किस प्रकार से हासिल करेंगे। तौभी, हम शान्ति या मेल का पीछा करने के लिए बुलाए गए हैं, भले ही, यह निरर्थक प्रतीत हो। और समय समय पर इसके अद्भुत और चकित कर देने वाले परिणाम सामने आते हैं जब हम मसीह के सुसमाचार के योग्य आचरण करते हैं (फिलि. 1:27)।

इस वर्ष शान्ति रविवार के लिए तैयार यह मार्गदर्शिका उन समयों/परिस्थितियों की ओर हमारा ध्यान केन्द्रित कर रही है जब हमारी समझ से परे मसीह की शान्ति उन सारी बातों पर प्रबल हो जाती है जिन्हें हमने असम्भव जाना था – संक्षेप में, ऐसी शान्ति जो सारी समझ से परे है।

स. बाइबल पाठ:

फिलिप्पियों 4:6–7

अन्य स्थल:

यशायाह 12:2–6;

लूका 1:46–55

2. प्रार्थना निवेदन

- जैसा कि कुछ ही समय पहले संसार भर के अनेक देशों में नई सरकार बनाने के लिए चुनाव सम्पन्न हुए हैं, हम नए और फिर से चुने गए अगुवों के लिए प्रार्थना करें। हम प्रार्थना करें कि प्रभु उन्हें बुद्धि दे, वे सत्ता का लालच त्याग कर, एक दूसरे का सहयोग करें, और अपने नागरिकों की शान्ति और उनके कल्याण के लिए कार्य करें। हम यह स्मरण रखें कि परमेश्वर का राज्य सीमाओं से परे है।
- ''क्योंकि वही हमारा मेल है जिसने दोनों को एक कर लिया और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी ढा दिया'' (इफि. 2:14)। प्रभु से प्रार्थना करे कि वह हमें पवित्र आत्मा पर निर्भर रहना सिखाए जिससे कि हम शान्ति के ऐसे लोग बन सके जो आपस में असहमत लोगों के बीच के बैर की दीवार को तोड़ने में मसीह का अनुसरण करते हैं।
- ''प्रेम में भय नहीं होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है . . . जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है वह अपने भाई से भी प्रेम रखे'' (1 यूहन्ना 4:18अ, 21ब)। प्रार्थना करें कि हम परमेश्वर के प्रेम को स्वीकार करें और उमण्डते हुए उसके अनुग्रह में, दूसरे से प्रेम रख सकें। ऐसा करने के द्वारा, हम भय और विभाजन पर विजय हासिल कर सकें।
- कोलम्बिया में, मार्क्सवाद प्रेरित समूह, एफएआरसी के साथ पिछले 50 वर्षों से चले आ रहे सशस्त्र संघर्ष को समाप्त करने शान्ति की प्रक्रिया की शर्तों के अनुसार सहायता और विकास में अपना योगदान देने में सरकार आनाकानी कर रही है। प्रार्थना करें कि शान्ति की सहमति को पूरी करने के लिए प्रभु इच्छा प्रदान करे। प्रार्थना करें कि हिंसावादी अपने हथियार डाल दें।
- विश्वास और आचरण की दृष्टि से एक विश्वव्यापी समुदाय के रूप में हम राष्ट्र, जाति, वर्ग, लिंग, और भाषा से ऊपर उठकर रहते हैं। हमारा प्रयास रहता है कि हम बुराई की शक्तियों से समझौता किए बिना संसार में जीवन व्यतीत करें, दूसरों की सेवा करने के द्वारा परमेश्वर की गवाही दें, सृष्टि का ध्यान रखें, और सब लोगों को न्यौता दें कि वे यीशु मसीह को उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में जानें।(एमडब्ल्यूसी साझा विश्वास 7)

जेकेआई इन्जिल केराजान

वर्तमान में अनेक लोगों की परिस्थितियाँ अस्थिर और अनिश्चित हैं, जिसके कारण वे अपनी जीविका के लिए दूसरे विकल्पों की तलाश कर रहे हैं। परमेश्वर ऐसे लोगों की सहायता करे। आशा की तलाश में भटक रहे इस प्रकार के लोगों को स्नेहिल और स्वीकार करने वाले हाथ मिलें। नए भाई बहनों को स्वीकार करने में संकोच और भय को लोगों के मनों से परमेश्वर दूर करे।

- समाज के निचले तबके के लोगों के दृष्टिकोण को सुनने के लिए प्रभु हमें प्रेरित करे। हम परमेश्वर की शिक्षाओं को ऐसे लोगों के दृष्टिकोण से समझ सकें जो अत्याचार झेल रहे हैं। इस प्रकार का दृष्टिकोण हमें परिवर्तित कर देने वाले और शान्ति की स्थापना करने वाले सुसमाचार की बेहतर समझ हासिल करने में सहायता करे।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

शान्ति रविवार

3. शान्ति रविवार के लिए गीत

प्रभु का आनन्द है मेरी ताकत (370 **मसीही गीत, एमसीआई**)
तू ही शान्ति का राजा है
शान्ति का राजा आ रहा है (523 **मसीही गीत, एमसीआई**)
प्रभु जी तेरी शान्ति का बना मुझे हथियार (315 **मसीही गीत, एमसीआई**)
जब हम ले कर के हाथ (417 **मसीही गीत, एमसीआई**)
यहोवा चरवाहा मेरा (200 **मसीही गीत, एमसीआई**)
जब जीवन के दुख सागर में (396 **मसीही गीत, एमसीआई**)

4. अतिरिक्त जानकारियाँ

www.mwc-cmm.org/peacesunday

इस मार्गदर्शिका में अन्य सहायक सामग्रियाँ

* आराधना की पुकार/आशीष वचन, पृ. 3
* प्रार्थना और गीत, पृ. 5
* उपदेश के लिए टीका, पृ. 8
* गवाहियाँ और मनन, पृ. 12

ऑनलाइन:

* तस्वीरें (इस मार्गदर्शिका में दी गईं तस्वीरों सहित)

बहाति मुताबेशा

हैंक स्टेन्वर्स

एबेनेजर मोन्डेज

5.

- *आराधना का घेरा* – सारी मण्डली, या बच्चों के समूह से कहें कि वे एक घेरा बना कर खड़े हो जाएं। जब घेरा बन जाए, तो कुछ समय प्रार्थना करने, गीत गाने, या यह गवाही देने में बिताएं कि किस प्रकार से मण्डली के लोगों ने अपने समुदाय में या संसार में शान्ति का या शान्ति की आशा का अनुभव किया।
- *शान्ति का वृक्ष संग्रह* – एक दीवार पर एक पेड़ के तने को चिपकाएं या टांगे (हो सके तो इस पर फिलिप्पियों 4:6–7 लिख लें)। मण्डली के सदस्यों या बच्चों के समूह को गोंद लगे या चिपकाने वाले रंगबिरंगे कागज के छोटे छोटे शीट्स (चिपकने वाले रंगीन नोट पैड से) बाँट दें, कि वे उस पर लिख कर या चित्र बना कर यह बताएं कि पिछले वर्ष किस तरह से उन्होंने शान्ति को साकार होते अनुभव किया है या किस तरह से शान्ति को अपने जीवन में लागू किया है। अब उन्हें अवसर दें कि वे इन चिपकने वाले नोट्स को तने या डालियों पर चिपकाएं जिससे कि एक रंगबिरंगा वृक्ष तैयार हो जाए।
- *मौन मनन* – हमारे संसार में शान्ति और न्याय के लिए मौन प्रार्थना करने में कुछ समय बिताए।
- *प्रार्थना भ्रमण* – आसपड़ोस में पैदल भ्रमण के लिए निकले, बीच बीच में अलग अलग स्थानों में समुदाय के लिए प्रार्थना करें। विशेष रूप से ऐसे स्थानों में, जहाँ हिंसक घटनाएं हुईं हों।

सम्पर्क हेतु पता:
एन्ड्रू सुडरमैन,
एमडब्ल्यूसी पीस कमीशन सेक्रटरी
AndrewSuderman@mwc-cmm.org

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

शान्ति रविवार

आराधना की पुकार और आशीष वचन के लिए सुझाव

आराधना की पुकार: (अ, ब, या स में से कोई भी एक)

अ. यशायाह भविष्यद्वक्ता के आमंत्रण की ओर ध्यान लगाएं

आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर,
याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएँ;
तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा।
वह जाति जाति का न्याय करेगा,
और देश देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा;
और वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल
और अपने भालों को हँसिया बनाएँगे;
तब एक जाति दूसरी जाति के विरूद्ध फिर तलवार न चलाएगी,
न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे।[1]

(यशायाह 2:3–4 पर आधारित)

आइये हम प्रार्थना करें . . .

ब. आप सभों का स्वागत है जो मन के दीन है!

आप सभों का स्वागत है जो शोक करते हैं!
आप सभों का स्वागत है जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं!
आप सभों का स्वागत है जो मेल कराने वाले हैं!
आप सभों का स्वागत है जो यीशु मसीह के नाम पर दुख सहते हैं और ऐसे कष्ट सहते हैं जो दूसरों के लिए कठिन हैं!
प्रभु यीशु मसीह में, परमेश्वर आप सभों को अपनाना चाहता है!
वही हमारे साथ हर दिन के हमारे बोझों को उठाना चाहता है!
आइये आज की सुबह हम उसकी उपस्थिति में अपने हृदयों को खोलें, ताकि उसके आत्मा के अनुग्रह से उसका आनन्द हमें जकड़ ले!
आइये हम प्रार्थना करें . . .[2]

कॉंफ्रेंसिया इन्टरमेनोनिटा एम अंगोला में शान्ति रविवार 2018 मनाया गया। फोटो: गोम्स मिरांडा।

स. उत्तरवादी पठन, इसके पश्चात स्तुति के गीत और प्रार्थनाएं

समूह अ: आओ, हम प्रभु की बड़ाई करें
समूह ब: हमारी आत्मा, हमारे उद्धार करने वाले परमेश्वर से आनन्दित हो।
समूह अ: उस शक्तिमान ने हमारे लिए बड़े बड़े काम किए हैं। उसका नाम पवित्र है।
समूह ब: उसकी दया उन पर, जो उससे डरते हैं, पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है।
समूह अ: परमेश्वर ने राजाओं को उनके सिंहासनों से गिरा दिया; और दीनों को ऊँचा किया।
समूह ब: उसने भूखों को अच्छी वस्तुओं से तृप्त किया और धनवानों को छूछे हाथ निकाल दिया।
सब मिलकर: आओ हम प्रभु की बड़ाई करे और उद्धार करने वाले अपने परमेश्वर में आनन्दित रहें।[3]

(लूका 1:46–55 पर आधारित)

(जेन ब्लॉ, फ्राँस)

---

[1] रूत सी. डक और मारेन सी. ट्रायबस्सी, टच होलिनेस्स (क्लिवलैण्ड: पिलग्रिम प्रेस, 1990), 3, एलिन एम. मार्क के द्वारा उद्धरित, वर्ड्स फॉर वर्शिप (स्कॉटडेल, पीए: हेरल्ड प्रेस, 1996), 5।

[2] सिलवि हेग, *परोल्स एज प्रियरिस पोर ले कुल्टे*, मेनोनाइट, 11।

[3] तत्रैव, 2।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

शान्ति रविवार

अन्तिम प्रार्थना

हे प्रभु, न्याय और शान्ति के परमेश्वर,

हमारी सहायता कर कि हम अपनी तलवारें पीट कर हल के फाल और अपने भालों को हँसिया बना लें।

हमें सन्देह से निकाल कर विश्वास की ओर और मृत्यु से निकाल कर पुनरूत्थान की ओर ले चल। हमारी निराशाओं को आशा में बदल दे और हमें भय से निकाल कर भरोसे की ओर ले चल।

हमें प्रेरित कर कि हम एक साथ मिलकर प्रार्थना और सेवा कर सकें, एक साथ मिलकर हँस सकें और रो सकें, दे सकें और प्राप्त कर सकें, दर्शन देख सकें और उसे पूरा कर सकें।

हमारे हृदय, यह संसार और यह विश्व

तेरे प्रेम, तेरी शान्ति, तेरी क्षमा,

और तेरी आशीष से भर जाए।

(*एनटोइन नोअस,* ला जेलेट एट ला क्रंच, *प्रेयर्स एण्ड सेलिब्रेशन्स, टोम 3, रेवियल पब्लिकेशन्स, 2002, 151* से)

आशीषवचन

और अब परमेश्वर की शान्ति,

जो हमारी सारी समझ से परे है,

तुम्हारे हृदयों और तुम्हारे विचारों को परमेश्वर,

और उसके पुत्र यीशु मसीह,

हमारे प्रभु के प्रेम और ज्ञान में सुरक्षित रखे;

और परमेश्वर पिता, और पुत्र और पवित्र आत्मा की आशीष तुम पर सदा बनी रहे। आमीन।

(जेनी ब्लॉ, फ्राँस)

मेनोनाइट चर्च इन इण्डिया की एक मण्डली मेनोनाइट चर्च, राजनाँदगाँव में 2017 शान्ति रविवार मनाया गया। फोटो: विकल राव।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

शान्ति रविवार

प्रार्थना और गीत

शान्ति रविवार के लिए प्रार्थना

धन्यवाद की प्रार्थना

हे प्रभु परमेश्वर, तेरा धन्यवाद हो, कि तूने हमें प्रार्थना में तेरे पास आने का अधिकार बिना दाम दिया है।

प्रार्थना के माध्यम से, तू हमें अपनी बातों को तेरे सम्मुख बिना भय के व्यक्त करने की स्वतंत्रता देता है, क्योंकि तू शान्ति का हमारा पिता है।

हे परमेश्वर, तेरे साथ किसकी तुलना की जा सकती है?

युग युग से तू ही परमेश्वर है और तू परम शान्ति में राज्य करता है।

हाँ, तू ही अनन्त शान्ति, यहोवा *शालोम* है।

तू शान्ति का राजकुमार भी कहलाता है।

तू शान्ति है और शान्ति का सोता भी, तू अनन्त शान्ति में डूबा हुआ है।

और जो शान्ति को पा लेते हैं वे शान्ति के तेरे स्वरूप को धारण कर लेते हैं, क्योंकि वे तेरे पुत्र और तेरी पुत्रियाँ कहलाते हैं।

हमारे पापों के अंगीकार की प्रार्थना

और तौभी, परमेश्वर, हमने तेरे इस स्वरूप को अपने जीवन के द्वारा प्रतिबिम्बित नहीं किया है।

हमने इस शान्ति को अनेक बार स्वीकार नहीं किया।

हाँ, जो पाप हमने शान्ति के विरूद्ध किया है, हम उनसे मन फिराते हैं।

हम उन भाई बहनों से क्षमा चाहते हैं जिन्हें हमने ठोकर और हानि पहुँचाया है, हम उन भाई बहनों से भी क्षमा चाहते हैं, जिनके मध्य हमने असहमति और विभाजन उत्पन्न किया।

हम अपने घमण्ड, जलन, महत्वाकांक्षाओं और लोभ के लिए क्षमा चाहते हैं जिसके कारण अनेक बार हम शान्ति स्थापित करने की अपनी सेवा में अविश्वासयोग्य ठहरे।

मन फिराने के द्वारा, हम नए सिरे से अपने आप को एक ऐसे जीवित बलिदान के रूप में चढ़ाते हैं, जो हर मनुष्य के लिए प्रेम, क्षमा, मेल, और शान्ति की ईश्वरीय योजना को बढ़ावा देने के लिए परमेश्वर की दृष्टि में ग्रहणयोग्य है। हे प्रभु, हमें यह अनुग्रह दे।

हे दया के परमेश्वर, हमें करूणा और दया की अपनी आँखें प्रदान कर, जिससे कि, हम युद्ध, आतंक, शरणार्थी समस्या, बेघर प्रवासियों की भीड़, और अकाल जैसी मनुष्य की भयानक पीड़ाओं को समझ सकें। आ, हमारी उदासीनता दूर करने में सहायता कर।

एकता के लिए प्रार्थना

हे शान्ति के परमेश्वर

हम प्रार्थना करते हैं कि प्रत्येक स्थानीय कलीसिया और सभी कलीसियाएं मिलकर अपने आप को संसार की शान्ति के लिए पूरी तरह से समर्पित करें,

हमें अनुग्रह दे, कि सृष्टि के साथ न्याय और सृष्टि के प्रति निष्ठा के लिए, सबसे निर्बल वर्ग के अधिकारों के लिए और वंचितों की आवश्यकताओं के लिए हम पूरी तरह से समर्पित हो जाएं।

जिस प्रकार से तूने प्रार्थना किया कि हम एक हो जाए, हाँ प्रभु, हम एक हो जाना चाहते हैं।

हम मसीह की इच्छा के अनुसार मसीहियों की एकता के लिए प्रार्थना करते हैं,

कि हमारे बीच की प्रतिद्वंदिता जाती रहे ताकि हम मेल के साथ जीवन बिता सकें और परिवार, कलीसिया, और समाज के लिए परमेश्वर की ओर से चाही गई एकता का एक चिन्ह बन सकें;

ताकि हम शान्ति और मानवता के पूर्ण कल्याण के लिए और अधिक प्रभावशाली रूप से समर्पित हो सकें।

हाँ, परमेश्वर हमारे पिता, तेरी भलाई सारी भलाइयों को पीछे छोड़ देती है, तुझ में हम शान्ति, चैन, और मधुर सम्बन्धों का आनन्द उठाते हैं।

अपने विभाजित दासों के बीच मेल कर: एकता का अपना आत्मा तू हमें दे ताकि हम एक हो जाएं।

हमें प्रेम और भाईचारे की सहभागिता में एक कर; आपस के सम्बन्धों में हमें एक कर, और दूसरों के साथ हमारे सम्बन्धों में हमें एक कर; उस शान्ति में एक कर जो तुझ से आती है और सारे सम्बन्धों को मधुर बनाती और तालमेल लाती है; तेरे प्रिय पुत्र के प्रेम और उसकी दया में एक कर जो तेरे साथ पवित्र आत्मा की एकता में रहता और राज्य करता है।

मेनोनाइट ब्रदरन चर्च इन मलावी में शान्ति रविवार 2018 मनाया गया। फोटो: बहाती मतबेशा

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

शान्ति रविवार

सहनशीलता के लिए प्रार्थना

हे शान्ति के राजकुमार!

हमें मेल करवाने वाले बना। तूने कहा है कि हम हर एक व्यक्ति से बिना भेदभाव प्रेम रखें।

हे प्रभु होने दे, कि तेरी कलीसिया अन्य धर्मों के मूल्यों का जानने और समझने के लिए तथा उनके साथ और सद्भावना रखने वाले सभी लोगों के साथ वार्तालाप करने के लिए तैयार रहे, ताकि सारी जातियाँ और लोग एक दूसरे को, और शान्ति की सेवा को समझ सके।

हे प्रभु, हम प्रार्थना करते हैं कि हम स्वयं, और हमारे सारे संगी मनुष्य व्यक्ति के प्रतिष्ठा और उनसे छिने न जा सकने वाले अधिकारों का सम्मान करने में बढ़ते जाएं।

हे पवित्र परमेश्वर, तूने हम सब को एक साझा जीवन में आपस में बान्ध कर रखा है। न्याय और सत्य के हमारे युद्ध के उत्साह में, हमारी सहायता कर कि हम बैर और कड़वाहट में एक दूसरे का विरोध न करें, परन्तु इसके विपरीत, एक दूसरे को सहन करते हुए और एक दूसरे का आदर करते हुए साथ मिलकर कार्य कर सकें।

हाँ, प्रभु, जो हमसे भिन्न हैं, उनके प्रति अपने प्रेम की हम पर छाप लगा।

पर्यावरण के लिए प्रार्थना

हे परमेश्वर, जगत और सारी वस्तुओं के सृष्टिकर्ता, हमारी शान्ति की गहराई पर्यावरण के प्रति हमारे सुप्रबन्ध पर भी निर्भर करती है।

तूने हमें अपना साझेदार और अपना सहकर्मी बनाया है, और हम पर भरोसा रख कर अपनी सृष्टि हमें सौंप दिया है।

हमें बुद्धि और पर्यावरण के प्रति लगाव दे कि हम प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग इस तरीके से कर सकें जिससे कि हमारे दुरूपयोग के कारण किसी को कोई हानि न हो और अनियंत्रित हो सृष्टि हमारे विरूद्ध उथल पुथल न मचा दे, परन्तु सुप्रबन्ध के परिणामस्वरूप, आने वाली पीढ़ियाँ तेरी भलाई और सृष्टि की भेंट के लिए तेरी स्तुति कर सके।

फिलिप्पींस में विश्व सहभागिता रविवार 2018 मनाया गया। फोटो: ज़ांडर डी लिओन

विनती

हे प्रभु परमेश्वर, हम ने जो कुछ तुझे अर्पण किया है उसे ध्यान में रखते हुए, हम निश्चितता, शान्ति, और चैन के लिए प्रार्थना करते हैं क्योंकि तू ने हमें आश्वस्त किया है कि हमें किसी भी बात से डरने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि तू हमारा परमेश्वर है।

हमारे बताने से पहले ही तू हमारी आवश्यकताओं को जानता है।

तौभी, हमें यह भाता है कि हम तुझे पुकारें क्योंकि तू हमारा पिता है।

हमें अपनी शान्ति दे, वैसी शान्ति नहीं, जो संसार देता है, परन्तु ऐसी शान्ति जो हमारे प्राण और आत्मा, हमारे गूदे गूदे और गाँठ गाँठ, हमारे हृदय की भावनाओं और विचारों को आर पार छेदती है; ऐसी शान्ति जो हमारी बुद्धि को रूप देती है और हमारे विचारों को उचित, पवित्र, भली, सुहावनी और सद्गुण व प्रशंसा की बातों से भर देती है।

हे अनन्त परमेश्वर, हमारे जीवनों को ऐसे मूल्यों से भर दे जो शान्ति के राजकुमार के स्वरूप में सच्ची और वास्तविक शान्ति का आधार है। आमीन।

(सियाका त्रोआरे, बुरिकना फासो)

शान्ति रविवार

विश्वास के अंगीकार, समर्पण, और अभिषेक की प्रार्थना

प्रार्थना 1: शान्ति के लिए समर्पण

हे सर्वाधिकारी परमेश्वर, तेरा मार्ग शान्ति का मार्ग है।

धन्य है वह, जो इस पर चलता है, क्योंकि इसी मार्ग पर हमें दया, प्रेम, न्याय, दीनता, आज्ञाकारिता, और धर्य प्राप्त होता है।

शान्ति निर्वस्त्र को वस्त्र पहिनाती है, भूखे को तृप्त करती है, प्यासे को पानी पिलाती है, दरिद्र की सुधि लेती है, झिड़की देती है, सचेत करती है, ढाढ़स बँधाती है, और सिखाती है। वह अपने सारे मार्गों में संयमी, इमानदार, पवित्र, और खरी है। वह किसी के लिए ठोकर का कारण नहीं है और वह अनन्त जीवन की ओर ले जाती है।

(मेनो साइमन्स 1496–1561)

"भजन संहिता पर आधारित," (1537)

प्रार्थना 2: तू सदा मेरे संग रहेगा

हे प्रभु, मैं जानता हूँ कि जितने तुझ पर भरोसा रखते हैं, उनके लिए तू विश्वासयोग्य परमेश्वर है।

जब मैं अंधकार में हूँ, तब तू ही मेरा जीवन है।

जब मैं बन्दीग्रह में हूँ, तब तू ही मेरे साथ है।

जब मैं त्यागा हुआ हूँ, तब तू ही मुझे शान्ति देता है।

जब मैं मृत्यु से घिरा हुआ हूँ, तब तू ही मेरा जीवन है।

जब दूसरे लोग मुझे शाप देते हैं, तब तू मुझे आशीष देता है।

जब वे मुझे कष्ट देते हैं, तब तू ही मुझे आश्वस्त करता है।

जब वे मुझे पीटते हैं, तब तू ही मुझे ऊँचा उठाता है।

और यदि मैं मृत्यु की तराई में हो कर चलूं, तू सदा मेरे साथ बना रहेगा।

(मेनो साइमन 1496–1561)।

"भजन 25 पर आधारित," (1537)

गीत

ईश्वर ही की शान्ति नदी ही की है,

1. ईश्वर ही की शान्ति नदी ही की है,
बढ़ती आगे बढ़ती, जयवन्त होती है,
पूरी है पर तौभी बढ़ती जाती है
लम्बी चौड़ी गहरी होती जाती है।

कोरस:
ईश्वर की समीपी देती है आराम
भक्तिमान के दिल को पूरा है विश्राम

2. उसका हाथ सामर्थी है अद्भुत अवस्थान
शत्रुओं के बैर से उत्तम रक्षास्थान
चिन्ता और आशंका दिल से जाती है
कभी न घबराहट वहाँ आती है

3. हर एक दुख और खुशी ऊपर ही से है
प्रेम परमेश्वर ही का उसका सोता है,
अपने को हम सौंप दे वह सहायक है
वही कठिनाई में सच्चा मित्र है।

(फ्राँसिस आर. हावेरगल, इग्लैण्ड)

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

शान्ति रविवार

उपदेश के लिए टीका

"ऐसी शान्ति जो सारी समझ से परे है"

शान्ति रविवार के उपदेश के लिए टीका

– रबेका गोंज़ालेज़ तोरेस (मैक्सिको)

पत्री की पृष्ठभूमि

लेखक

यह पौलुस के द्वारा लिखी गई एक गम्भीर पत्री है। फिलिप्पी को लिखी गई यह पत्री पौलुस ने किन परिस्थितियों में लिखी, इस पर, शायद ही हम अधिक विचार करते हों, परन्तु वचनों के पीछे पाए जाने वाले कारण और अभिप्राय को समझने के लिए हमें लेखक की पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना आवश्यक है।

पौलुस को बन्दीग्रह में डाल दिया गया था, सार्वजनिक सुरक्षा को खतरे में डालने या किसी संगी नागरिक पर लाँछन लगाने के दोष में नहीं, परन्तु सुसमाचार का प्रचार करने के कारण। उसकी बुलाहट और सेवा के प्रति उसकी विश्वासयोग्यता ने उसे एक ऐसी मुश्किल स्थिति में डाल दिया जिसके कारण उसे बन्दीग्रह की सजा सुनाई गई। मुकद्दमें और फैसले के लिए ठहरे हुए, जेल में उसकी कैद ने उसके भविष्य को लेकर जो अनिश्चितता उत्पन्न कर दिया था वह उसके इन वचनों में व्यक्त किया गया है, "मर जाना लाभ है" (फिलि. 1:20–24)। ठीक उसी तरह से, जब अत्यंत कठिन परिस्थितियों में पड़ा कोई भी कैदी मृत्यु की इच्छा करने लगता है, उसके सामने जीवित रहना और अपने कष्ट को अर्थ देना एक चुनौती बन जाती है। अपनी सेवा और जीवन के उद्देश्य के विषय में पौलुस का दृढ़ निश्चय उसे बल देता है कि वह परिस्थितियों से उबर कर, अपने बारे में न सोचे ताकि ऐसी परिस्थितियों के बाद भी वह अपनी सेवा को पूरी कर सके (1:12–14)।

पौलुस दो लोगों का उल्लेख करता है जो इस कठिन समय में उसके साथ हैं। उनमें से एक तीमुथियुस (1:1) और दूसरा इपफ्रुदीतुस है (2:25) जिसे पौलुस के पास कलीसिया के प्रतिनिधि के रूप में भेजा गया और जिसके माध्यम से आवश्यकता की घड़ी में उसने सहायता प्राप्त की।

द नीदरलैण्ड्स में विश्व सहभागिता रविवार 2019 मनाया गया। फोटो: जेकब एच. किक्कर्ट

पृष्ठभूमि

पहली शताब्दी के अनेक ऐसे साहित्यिक पाठ हैं जिनमें प्राचीनकाल के बन्दीगृहों के बारे में जानकारियाँ दी गई हैं। तंग स्थान, जहाँ हवा पार होने की भी जगह नहीं, ठूँस ठूँस कर भरे गए कैदी, अंधेरा, अशिष्ट, और गन्दा वातावरण। बन्दियों को शारीरिक और मानसिक यातनाएं दी जाती थी, लोहे की जंजीरों से उनके हाथ, पैर, और गले को जकड़ दिया जाता था। वे एक पहरेदार की निगरानी में रहते थे और कभी कभी तो सिपाही भी उनसे बंधा हुआ रहता था। बन्दी को अधिक यातना देने के लिए मृत्यु दण्ड में विलम्ब किया जाता था, जिसके कारण वे इस अनिश्चयता में जीवन बिताते रहते थे कि उन्हें दण्ड कब सुनाया जाएगा (फिलि. 1:20)। विशेषाधिकार प्राप्त कैदियों की स्थिति बेहतर होती थी क्योंकि उन्हें जंजीरों से बाँधा नहीं जाता था। किन्तु प्रेरितों 16:22–24 की गवाही के अनुसार, पौलुस और सीलास की कैद विशेषाधिकार प्राप्त कैदियों वाली कैद नहीं थी। इस तरह से, इससे हमें यह बात समझ में आ जाती है कि पौलुस ने जब इस पत्री को लिखा तब वह किस प्रकार के अनुभव से गुजर रहा था।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

शान्ति रविवार

पाठक (पत्री किसे लिखी गई थी)

यह पत्री फिलिप्पी की कलीसिया, और मुख्य रूप से बिशपों, डीकनों, और अन्य सम्बन्धित पक्षों को लिखी गई थी। बिशप और डीकन जैसे शब्दों से यह संकेत मिलता है कि इस समय तक कलीसिया काफी व्यवस्थित हो चुकी थी और एक प्रकार के संस्थागत संरचना में स्थापित हो चुकी थी। यह सम्भव है कि यह संगठन अन्य यूनानी समूहों की संरचना से प्रेरित था (1:1–2)। यह एक ऐसी कलीसिया थी जिसकी स्थापना पौलुस के द्वारा की गई थी, और इस कलीसिया में उसका जी लगा रहता था (4:1)। यह पत्री प्रशंसा और प्रेम व मित्रता के शब्दों से भरपूर है (1:3, 12)। इस पत्री में सबसे अधिक चौंकाने वाली बात यह है कि इस पत्री में आनन्दित रहने के लिए उत्साहित किया गया है, जो हमारे सामने यह प्रश्न उत्पन्न करती है: पौलुस किस प्रकार से आनन्द का अनुभव कर सकता है और अपने पाठकों को आनन्दित रहने के लिए उत्साहित कर सकता है जब वह स्वयं एक भयानक परिस्थिति में फँसा हुआ था? एक अन्य प्रश्न जो यहाँ हमारे सामने आता है, वह यह है: इस कलीसिया में, जिससे पौलुस इतना अधिक संतुष्ट था, ऐसी क्या समस्या थी, कि इसने अपना आनन्द खो दिया था और पौलुस को उनसे यह कहना पड़ा कि वे अपने आनन्द को फिर से प्राप्त करें और इसे बनाए रखें?

दूसरों के प्रति, जिनके साथ हमारे सम्बन्ध ढेर सारे अनुभवों, संतुष्टि, और परस्पर उन्नति से पूरिपूर्ण हैं, हमारा प्रेम ही है जो हमें स्वयं की परिस्थितियों की परवाह किए बिना चोटिल और जोखिमभरी परिस्थिति में पड़े दूसरे लोगों के बारे में विचार करने को प्रेरित करता है। यह एक कारण है कि पौलुस यह परवाह नहीं कर रहा है कि वह किस स्थान पर है, या उसकी मृत्यु निकट है, या उस स्थान पर वह प्रतिदिन भयानक कष्ट झेल रहा है। दूसरों के प्रति उसकी चिन्ता ही उसे यह लिखने और दूसरों को उत्साहित करने के लिए प्रेरित करती है कि वे उस समय तक आगे बढ़ते रहे जब तक कि अपने लक्ष्य तक पहुँच न जाएं (3:12–15)।

मैं तीन महत्वपूर्ण विचारों प्रस्तुत करना चाहता हूँ जिन्हें सामने लाने के लिए पौलुस ने इस पत्री को लिखा:

1. रीति विधियाँ थोपने वाले धार्मिक लोगों (यहूदियों) से सावधान करने जो यह जताते हैं कि ये रीति विधियाँ यीशु के पीछे चलने से भी अधिक महत्वपूर्ण हैं (3:1–10);
2. उत्साहित करने कि वे प्रभु में सदा आनन्दित रहें (3:1); और
3. इपफ्रुदीतुस को पौलुस के पास भेजने के द्वारा इस कठिन समय में उन्होंने जो सहयोग उसे दिया है उसके लिए अपना आभार प्रगट करने (2:25–30)।

इन्हीं दृष्टिकोणों के साथ हम इस वर्ष के बाइबल पाठ पर मनन आरम्भ करेंगे जो हमें उस शान्ति के महत्वपूर्ण पहलुओं पर चिन्तन करने का आव्हान कर रहा है जो सारी समझ से परे है।

फिलिप्पियों 4:6–7

प्रस्तावना

जीवन में किस प्रकार के संकट की परिस्थितियाँ परमेश्वर की शान्ति का अनुभव करवाती हैं?

रेयना नाम की केमरून की एक महिला एक चुनौतीपूर्ण यात्रा करने के लिए अपने देश से निकली, जैसा कि बहुत से लोग करते हैं, ताकि वह ''अमरीका जाने के अपने स्वप्न'' को पूरा कर सके, क्योंकि वह समझती थी कि वहाँ वह एक समृद्ध और सुखी जीवन व्यतीत कर सकेगी। अपनी इस यात्रा में वह सबसे पहले ब्राजील देश पहुँची। यहाँ वह डेढ़ वर्ष तक ठहर सकी, इस अवधि में उसने नौकरी किया ताकि अमरीका के लिए अपनी आगे की यात्रा को पूरी करने पैसे इकट्ठे कर सके। वह बताती है कि यह उसके लिए कितना कठिन था क्योंकि वह पुर्तगाली नहीं बोल सकती थी। परन्तु उसने यह भाषा सीख ली तथा अपनी इच्छाशक्ति और कपड़े सिलने की अपनी कला के बल पर वह घर की साज सज्जा के काम आने वाले गद्दीदार समानों को बनाने का कार्य कर सकी। इस तरीके से वह थोड़ा बहुत पैसे इकट्ठे कर सकी और कुछ मित्र भी बना सकी।

लैटिन अमरीका होते हुए वह अपनी यात्रा में आगे बढ़ी, इस यात्रा में उसे कठिनाइयों के साथ साथ भूख और खतरों का भी सामना करना पड़ा। शीघ्र ही उसका सारा पैसा समाप्त हो गया और उसने अपनी एक ब्राजीलियाई मित्र से सौ डालर उधार में लिया और वचन दिया वह इसे वापस कर देगी। इस तरह वह आगे बढ़ सकी। यात्रा लम्बी थी और खतरों से भरी थी। वह बताती है कि पनामा में उसे सिर्फ एक घण्टा दिया गया कि वह इस देश को पार कर ले, और ऐसा कर पाने से पहले उसे कई बार बाहर निकाल दिया गया। वह बताती है कि उसके लिए सबसे खतरनाक देश कोलम्बिया था। हथियारबन्द विद्रोहियों के क्षेत्र को पार करना और असमाजिक तत्वों के क्षेत्र को पार करना बहुत जोखिमभरा था और उसने अपने चारों ओर बहुत से लोगों को मरते हुए देखा। निकारागुआ में, उसे लूट लिया गया; किसी ने उस पर तरस खा कर उसे एक मुट्ठी चावल दे दिया। मैक्सिको में बहुत से अच्छे लोग मिले जिन्होंने उसकी सहायता की, परन्तु ऐसे स्थान भी थे, जहाँ से बचते हुए सावधानीपूर्वक दूसरे रास्ते से पार होना पड़ता था।

अन्त में जब वह सीमा तक पहुँच गई, तो उसने शरणार्थी शिविर में आवेदन दिया, उसे जाँच के लिए एक नजरबन्द केन्द्र में रख लिया गया जहाँ वह एक वर्ष तक रही (औरोरा, कोलोराडो में जीइओ नजरबन्दी केन्द्र)।

यहाँ पर आवश्यकता की हर चीज उसके लिए उपलब्ध थी। उसने स्पेनिश भाषा काफी सीख ली और कुछ कुछ अंग्रेजी भी। तौभी, मेलजोल और रिश्ते बनाना कठिन था क्योंकि उसके पास न कोई परिवार था और न उसका कोई भविष्य। वह कानूनी प्रक्रिया में आगे नहीं बढ़ सकी क्योंकि उसके पास कोई पहचानपत्र या कागजात नहीं थे। उसे लगता था कि रास्ते में किसी ने उससे यह चुरा लिया है।

परन्तु उसका विश्वास बढ़ता गया और उसे आशा थी कि परमेश्वर उसकी सहायता करेगा। मारिया नाम की एक अपरिचित महिला जो अमरीका में रहती थी, उसकी सहायता करने और उसे सहारा देने को तैयार हो गई, परन्तु इसके लिए उसे पहचान पत्र की आवश्यकता थी।

मत्शाबेज़ी ब्रदरन इन ख्राइस्ट चर्च इन जिम्बाब्वे में शान्ति रविवार 2017 मनाया गया। फोटो: सिबोनोकुहले नक्यूबे

रेयना के पास कोई पहचानपत्र नहीं था और इसलिए उसने सिर्फ एक निवेदन किया कि मारिया ब्राजील की उसकी मित्र से फोन पर बात करे और उसे बता दे कि उसे उसका दिया हुआ उधार अभी भी याद है और जब वह नजरबन्दी/जाँच केन्द्र से मुक्त हो जाएगी तो फिर से नौकरी कर उधार चुका देगी। इस तरह से, मारिया ने ब्राजील फोन किया और रेयना की परिस्थिति से उस महिला को आवगत कराया, और उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जब उस महिला ने उसे बताया कि रेयना ने अपना पहचान पत्र ब्राजील में ही छोड़ दिया था। यह एक चमत्कार था! इससे प्रक्रिया फिर से आरम्भ हो गई और रेयना को मुक्त कर दिया गया ताकि वह राजनैतिक शरण की अपनी प्रक्रिया में आगे बढ़ सके। कहानी के हर मोड़ पर रेयना के मुख से "सिर्फ परमेश्वर" ही निकलता था। अपनी हर परिस्थिति के बारे में बताते हुए वह कहती थी, "सिर्फ परमेश्वर ही बचाता है, सिर्फ वही चंगा करता है, सिर्फ वही चिन्ता करता है, प्रेम रखता है, और मुक्त करता है।" वह यह बात दृढ़ विश्वास के साथ कहती थी, और उसकी आँखें ऐसे आनन्द, आश्चर्य, और सराहना के भाव से भरकर चमक उठती थी जिसका अनुभव हर उस परिस्थिति में होता है, जब परमेश्वर हस्तक्षेप करता है और आश्चर्यकर्म दिखाता है। मानवीय समझ के अनुसार उसकी कोई बात नहीं समझाई जा सकती, जिस पर वह भरोसा रखती थी, उस पर उसका एक सच्चा विश्वास था।

इतने अधिक कष्ट के मध्य इतनी अधिक शान्ति कैसे हो सकती है?

और यह शान्ति सिर्फ इसका अनुभव करने वालों तक ही सीमित नहीं रहती, परन्तु वे किस प्रकार से अपने आसपास के लोगों को इस शान्ति को, जो सिर्फ ऊपर ही से आती है, जीने और इसका अनुभव करने के लिए प्रेरित भी करते हैं?

1. इस शान्ति को, जो सारी समझ से परे है, अनुभव करने का एक आमंत्रण

पौलुस इस समय जेल में था, वह ऐसी दशा में था जिसका अनुभव हम में से अधिकांश लोगों ने नहीं किया है। ऐसी भयानक परिस्थिति में, कठिन परिस्थितियों के साथ जीवन बिताते हुए सिर्फ दो ही विकल्प सामने रहते हैं: अ) सिर्फ स्वयं को ही पीड़ित मानें: सिर्फ स्वयं को ही देखते रहे, सिर्फ अपने लिए दुख सहें और अपने आसपास के सब लोगों को बताते रहें कि आप कितना अधिक दुख उठा रहे हैं ताकि वे आपकी दशा को समझ सकें। एक पीड़ित बन कर अपने आसपास के लोगों से यह आशा रखें कि वे आपकी दशा पर तरस खाएं, या ब) अपना ध्यान स्वयं रखें और कार्य में लग जाएं। अपना ध्यान रखें, और साथ ही साथ, अपने आसपास के, और त्याग दिए गए लोगों के बारे में भी हमेशा चिन्ता करते रहें।

संकट की परिस्थिति भविष्य को लेकर अनिश्चयता और पीड़ा को जन्म देती है (यह मानसिक और शारीरिक दोनों हो सकती है)। किन्तु, दूसरों के प्रति प्रेम, चाहे यह परिवार के प्रति हो, मित्रों के प्रति हो, या कलीसिया इत्यादि के प्रति, एक व्यक्ति को बल प्रदान करता है कि वह परिस्थितियों पर प्रबल हो और स्वयं की और अपने आसपास के लोगों की दशा पर गहराई से चिन्तन करें। यह परमेश्वर की उपस्थिति ही है जो पोषण करती है और इस प्रकार का झुकाव उत्पन्न करती है, और ऐसी शान्ति को जन्म देती है जिसे महसूस किया जा सकता है, और असम्भव को सम्भव बनाया जा सकता है; एक ऐसी शान्ति जो हृदय को भरोसा देती है कि वह स्वयं को सुरक्षित, बचाया हुआ, और भला चंगा अनुभव करे, चाहे परिस्थितियाँ जैसी भी हो।

जंजीरें, कड़ी निगरानी, जेलखाने का तंग स्थान, सजा को लेकर अनिश्चयता – जीवन या मृत्यु – पौलुस को रोक न सके कि वह अपनी आँखें उठाकर फिलिप्पी के अपने भाई बहनों की ओर ध्यान लगाए और उनके कल्याण की चिन्ता करे।

2. यह गहरी शान्ति किस प्रकार से आती है

प्रेम और मित्रता की संगति

पौलुस के साथ तीमुथियुस था, और इस विषय पर वह अलग अलग समयों और अलग अलग परिस्थितियों में बताता है, इसमें उसकी कैद का यह समय भी शामिल है। ऐसा प्रतीत हो होता है कि अपनी कैद में भी वह तीमुथियुस की संगति में था। वह इपफ्रुदीतुस से भी मिला (3:25–27) जो उसकी प्रिय कलीसिया फिलिप्पी का प्रतिनिधि बन कर उसके पास आया था। फिलिप्पी की कलीसिया ने पौलुस की आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए आवश्यक सहायता भेजा था और इपफ्रुदीतुस के माध्यम से पौलुस को इस कलीसिया के द्वारा भेजा यह स्नेह प्राप्त हुआ (4:15–17)।

मेलमिलाप (4:2–3)

पौलुस अपने निष्ठावान साथी (जिसके नाम का उल्लेख नहीं किया गया है) के साथ मिलकर दो स्त्रियों के बीच मध्यस्थ बन कर मेल का निवेदन करता है जिन्होंने क्लेमेंट और अन्य लोगों के साथ मिलकर सुसमाचार प्रचार करने के लिए एक समूह का गठन किया था। अब यूदिया और सुन्तुखे के बीच मतभेद आ गए थे और वे एक दूसरे से अलग अलग हो चुकी थी। जब बन्दीग्रह में पौलुस को इसकी जानकारी मिलती है तो वह इन पंक्तियों में दोनों के बीच मेलमिलाप को बढ़ावा देने का प्रयास करता है। वह जानता है कि बातचीत और मेलमिलाप के माध्यम से परमेश्वर की शान्ति में जीवन बिताना कितना महत्वपूर्ण है।

आनन्द (4:4–5)

जेल की परिस्थितियाँ उसे आनन्दित रहने से रोक नहीं पाती जब वह इस कलीसिया को स्मरण करता है जिससे वह प्रेम रखता है और वह उनसे कहता है कि वे भी प्रभु में आनन्दित रहें: ''प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूँ, आनन्दित रहो।'' यहाँ पर आनन्द की ओर ध्यान केन्द्रित करने और आनन्दित रहने के लिए कहा जा रहा है। दूर स्थानों में रहने वाले हमारे निकट सम्बन्धियों की स्मृतियों से उत्पन्न आनन्द को कोई भी जंजीर सीमित नहीं कर सकती।

चिन्ता मत करो परन्तु प्रार्थना करो (4:6)

पौलुस चाहता तो वह पत्री में चिन्ता व्यक्त कर सकता था, परन्तु उसने इसका ठीक विपरीत किया। इस पत्री में हम एक ऐसे पौलुस को देखते हैं जो कठिन परिस्थितियों में परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखता है। भले ही परिस्थितियाँ कठिन और भविष्य अनिश्चित थीं, वह प्रभु पर भरोसा करता है और उस पर विश्वास रखता है।

उपरोक्त सारी बातों के द्वारा हम उस गहरी शान्ति का अनुभव कर सकते हैं जो सारी समझ से परे है।

3. शान्ति जो सारी समझ से परे है

पद 7 का आरम्भ ''तब'' से होता है, जिसका उद्देश्य यह दर्शाना है कि उस शान्ति को अनुभव करने का अर्थ क्या है जो सारी समझ से परे है।

''तब,'' का अर्थ: प्रेम और मित्रता की संगति, मेल मिलाप के साथ रहना, आनन्द को व्यक्त करना, चिन्ता न करना; बल्कि, प्रार्थना करना। यह सारी बातें शान्ति का एक ऐसा अनुभव प्रदान करती हैं जो सारी समझ से परे है।

यह बात किसी के मुख से इन अत्यंत कठिन परिस्थितियों में निकलती हैं: जेल में पौलुस, लैटिन अमरीका से होते हुए रेयना की यात्रा जो उसने मृत्यु का सामना करते हुए पूरा किया, 16वीं शताब्दी के ऐनाबैपटिस्ट जो मृत्यु के मुँह पर खड़े हो कर भी गीत गाते थे, और इतिहास के वे सारे भाई बहन, जिन्होंने, अपने जीवन और अपनी गवाही के द्वारा, उस शान्ति का प्रदर्शन किया जो सारी समझ से परे है।

उपसंहार

वर्तमान में, अत्यंत कठिन परिस्थितियाँ हर देश और हर सन्दर्भ में पाई जाती है। यह खूबसूरत स्थल हमारे जीवनों में फिर से गूंजता है और हमें बुलाहट देता है कि हम उस शान्ति को अपने जीवन में साकार होते हुए देखे जो सारी समझ से परे है और जो हमारे हृदयों को हमारे प्रभु यीशु में सुरक्षित रखती है।

अपने जीवनों में, आप किन कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए परमेश्वर की इस गहरी शान्ति का अनुभव करते हैं?

प्रभु आपकी सहायता करे कि आप उस शान्ति के अपने अनुभवों की गवाही दे सकें जो जीवन में उत्पन्न होने वाले संकटों और संघर्षों के मध्य सारी समझ से परे है।

कोस्टा रिका में 2019 में आयोजित रिन्यूवल 2027 के दौरान स्थानीय कलीसिया अगुवों का सम्मान। फोटो: लिसा अंगर।

गवाहियाँ और मनन

गोलीबारी से शिक्षाएं:

परमेश्वर की शान्ति के प्रति विश्वासयोग्य बने रहना

– एन्ड्रिया मोया (कोलम्बिया)

कोलम्बिया में 2016 में देश की सरकार और सबसे बड़े विद्रोही समूह के बीच एक शान्ति समझौता की प्रक्रिया आरम्भिक चरणों में है। यद्यपि हम में से अनेक को काफी आशाएं थी कि शान्ति समझौते से देश के हिंसा के इतिहास में बड़ा परिवर्तन आएगा, किन्तु अनेक सशस्त्र लड़ाकुओं के बचे रहने, राजनैतिक भ्रष्टाचार मामलों की संख्या में बेहताशा वृद्धि तथा सामाजिक अगुवों व मानवाधिकार कार्यकर्ताओं की हत्या जैसी बातों के कारण हमारे मानवाधिकार का हनन हो रहा है और शान्ति स्थापना के लिए हमारी ईश्वरीय बुलाहट में बाधाएं आ रहीं हैं। कोलम्बिया में हिंसा की स्थिति हमारे सम्पूर्ण समाज पर प्रभाव डालती है, जिसमें कलीसिया समुदाय भी शामिल है, विशेष रूप से वे कलीसियाएं जो ग्रामीण क्षेत्रों में हैं और सशस्त्र गुटों (कानूनी और गैरकानूनी दोनों) के बीच होने वाली गोलीबारी में फँसे हुई हैं और सरकार ने जिनकी ओर ध्यान देना बन्द कर दिया है।

फिलिप्पियों 4:7 में हमें उत्साहित किया गया है कि हम परमेश्वर की शान्ति की प्रतिज्ञा पर भरोसा रखें, यह एक ऐसी शान्ति है जो सारी समझ से परे है। शान्ति समझौते के बाद मुझे एक बार अवसर मिला कि मैं देश के दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में स्थापित एक कलीसिया समुदाय का दौरा कर सकूं, यह कलीसिया परमेश्वर की शान्ति पर भरोसा करने वाली एक कलीसिया का उदाहरण है। इस नगर के निवासी 1960 से सशस्त्र समूहों के बीच में संघर्षों को देखते आ रहे हैं। कुछ ही दिनों पहले दो विद्रोही समूहों के बीच में छह दिनों तक संघर्ष चलता रहा। संघर्ष समाप्त होने के तीन दिनों बाद जब मैं इस समुदाय से मिलने गया, तो मैंने उस क्षेत्र के अनेक कलीसियाई अगुवों से मुलाकात की। इन अगुवों में एक ग्रामीण कृषक दम्पत्ति भी शामिल था जो पहाड़ पार उसी हिस्से से आए थे जहाँ गोलीबारी हुई थी। मैंने उनका अभिवादन किया और पूछा कि उनका यह सप्ताह किस प्रकार से बीता, उन्होंने उत्तर दिया, ''बहुत अच्छा, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह था।''

आगे चर्चा करने पर उन्होंने बताया कि इन संघर्षों के कारण उनके समुदाय पर गहरा असर हो रहा है। अनेक लोग अपने घरों से बाहर निकलने से डर रहे हैं क्योंकि इन सशस्त्र गुटों ने कर्फ्यू लगा दिया है।

समुदाय के अनेक लोगों को अपनी भूमि छोड़ने को कह दिया गया है। इसी भूमि पर सशस्त्र गुट अपना कब्जा करने के लिए लड़ाई कर रहे हैं: यह अवैध/प्रतिबन्धित फसलों के उत्पादन के लिए एक उपजाऊ जमीन है।

इस दम्पत्ति की कलीसिया के सदस्य उस पहाड़ी क्षेत्र पर एक बार फिर से इस लड़ाई के वास्तविक असर को झेल रहे थे, तौभी वे विश्वासयोग्य बने हुए परमेश्वर की शान्ति पर भरोसा रखे हुए थे। उन्होंने रात के सात बजे से लेकर सुबह के तीन बजे तक उस सप्ताह अनेक रातें समुदायिक प्रार्थना सभा का आयोजन किया, और अपने आप को परमेश्वर के हाथों छोड़ दिया। साथ ही वे अपने समुदाय के लोगों को उत्साहित करते रहे कि वे अपनी जमीनों पर भोजन और सब्जी की फसल ही उगाएं और अवैध फसल के उत्पादन के लिए बाध्य करने वालों के आगे न झुकें। वे अपने क्षेत्र के अन्य कलीसियाई अगुवों के साथ मिलकर यह योजना भी तैयार कर रहे थे कि तरह से इसका विरोध अहिंसक तरीके से किया जा सके। वे अपनी भूमि को नहीं छोड़ेंगे; यह उनकी भूमि है।

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति दिवस मनाने के लिए कोलम्बिया के ऐनाबैपटिस्ट भाई बहन अन्य लोगों के साथ मिलकर ''पान वाय पाज़'' (रोटी और शान्ति) पदयात्रा में शामिल हुए।

फोटो: ऐना वोग्ट

इस दम्पत्ति ने मुझे बताया कि वे परमेश्वर के अत्यंत धन्यवादी है कि उसने उस सप्ताह अपनी सुरक्षा प्रदान की और कलीसिया समुदाय और सामान्य समुदाय से अन्य कोई भी व्यक्ति इस गोलीबारी में आहत नहीं हुआ (यद्यपि सशस्त्र गुटों के दोनों पक्षों से कुछ लोग मारे गए)। उन्होंने कहा, ''हम जो कुछ कर सकते हैं, वह यह है, कि मसीह यीशु में परमेश्वर के वचन का प्रचार करें ताकि यह हिंसा और युद्ध समाप्त हो जाए।''

वे ठीक ऐसा ही करते हैं। यह समुदाय परमेश्वर की उस शान्ति की प्रतिज्ञा को साकार करती है जो सारी समझ से परे है। जब एक ऐसा युद्ध चल रहा हो जो लोगों को बेहाल कर देता हो, फसलों को नष्ट कर देता हो, और समुदाय को उनके स्थानों से बेदखल कर देना चाहता हो, उस समय प्रार्थना करने, भूमि की देखभाल करने, या एक समुदाय को स्थिर बनाए रखने के लिए संगठित करना व्यर्थ प्रतीत हो सकता है, परन्तु यह समुदाय शान्ति के इन्हीं कार्यों को मसीह के कदमों का अनुसरण मानता है।

दो गैरकानूनी सशस्त्र गुटों के बीच टकराव अभी थमा हुआ है, परन्तु सशस्त्र गुट अभी भी अस्तित्व में हैं और क्षेत्र को अपने अपने अधिकार में लेने का संघर्ष अभी भी कायम है। कलीसिया समुदाय भी कायम है, और यह प्रगट कर रही है कि परमेश्वर की शान्ति टकराव और अनिश्चय, यहाँ तक कि गोलीबारी के मध्य भी क्रियाशील और जीवित है।

2019 में कोस्टा रिका में भाई बहन साथ मिलकर रिन्यूवल 2027 के अवसर पर आराधना करते हुए। फोटो: लेन रेम्पल

प्रत्येक कदम एक प्रार्थना है

– वालेरि शोवाल्टर (यूएसए)

प्रत्येक कदम एक प्रार्थना है।

प्रत्येक कदम परमेश्वर के आगे एक याचना है जो जानता है कि महीनों या वर्षो तक, प्रतिज्ञा के एक देश की तलाश में भटकने का अर्थ क्या होता है।

प्रत्येक कदम एक पवित्र प्रतिरोध है, और दया व न्याय के लिए परमेश्वर को एक पुकार है।

इस प्रकार की लाखों प्रार्थनाएं ऊपर पहुँची, जब कैमरून और सेंगल जैसे देशों से हमारे *मित्र* पश्चिम की ओर, और बार्रियोस ऑफ हाँडुरस और एल सेल्वाडोर से *मित्र* उत्तर की ओर परमेश्वर से अपनी प्रार्थना के उत्तर की आस में भाग चले।

इस वर्ष के आरम्भ में, न्यूयार्क स्थित न्यू सैंकचुरी कोइलेशन (एनएससी) के साथ मिलकर मैंने यूएस/मैक्सिको सीमा पर वहाँ के मेनोनाइट लोगों के साथ कुछ समय बिताया। एनएससी के सुझाव के अनुसार हम ऐसे लोगों के लिए ''मित्र'' शब्द का प्रयोग करते थे जो एक समृद्ध जीवन की तलाश कर रहे हैं, ताकि हम उनके साथ अपने रिश्तों को एक नया नाम दे सकें।

दक्षिण यूएस सीमा की ओर उनकी यात्रा में, हमारे मित्र दुर्व्यवहार से मुक्त जीवनों का अनुभव करने की अपनी इच्छा को पूरी करने के लिए निकले। युद्ध से मुक्त जीवन। अपने माता पिता या अपने बच्चों के साथ बिताया जाने वाला जीवन। और सबसे बढ़ कर ये मित्र *जीवन* की ही तलाश कर रहे थे।

सान डियागो/तिजुआना सीमा पर, यद्यपि यात्राओं की गति धीमी हो गई, परन्तु प्रार्थनाएं नहीं ठिठकीं। बल्कि हमारे ये मित्र और भी उत्साह से प्रार्थना करने लगे जब उनके स्वप्न को पूरा करने के मार्ग में, ''प्रतिज्ञा के देश'' में उनके प्रवेश में एक बाधा आ गई। यहाँ प्रवेश करने के मार्ग में आई बाधाएं वास्तविक और उनके अनुमान की तुलना बहुत अधिक और बहुत कठिन थीं – वे मेरे – जो एक अमरीकी नागरिक होने के कारण प्रवास से सम्बन्धित नियमों के विषय में काफी कुछ जानता हो –अनुमान से भी बहुत अधिक और कठिन थीं। हमारे अनेक मित्र, जो पहले ही महीनों तक पैदल चल चुके थे, अब सीमा पर कुछ और महीनों के लिए फँस गए, और अपनी बारी आने तक ठहरे रहे (एक गैरकानूनी व्यवस्था जो प्रवासियों के अमरीकी प्रवास प्रक्रिया में प्रवेश करने के लिए जानबूझ कर विलम्ब करती है।)

मैक्सिको में रहते हुए, ऐसे अनेक लोग जिन्होंने शरण पाने के लिए आवेदन किया था अमरीकी प्रवास नीति के जानकार कुछ संवेदनशील वकीलों के द्वारा ''क्रेडिबल फीयर इन्टरव्यू'' (इस साक्षात्कार में आवेदक को सिद्ध करना पड़ता है कि उनका यह भय वाजिब है कि उनके मूल स्थान को लौटने से उन्हें खतरा है) और कस्टम नियम सम्बन्धी कठिनाइयों से निपटने के लिए तैयार किये गए। शरण प्राप्त कर पाना पूरी तरह से इस साक्षात्कार पर निर्भर रहता है। जब अपने भय को वाजिब सिद्ध करने के लिए उनका भाग्य एक तुला पर झूलता रहता है, उस समय, हमारे ये मित्र फिलिप्पियों 4:6 में दिए गए न्यौता को किस प्रकार से सुनते हैं?

जब पौलुस विश्वासियों से कहता है कि ''किसी भी बात की चिन्ता मत करो, परन्तु . . . तुम्हारे निवेदन . . . परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं,'' तो इसका अर्थ उन लोगों के लिए क्या है जो भयानक नजरबन्दी केन्द्रों में लम्बे लम्बे समयों तक जाँच के लिए ठहरे रहते हैं? और उनके लिए भी, जो अब भी मैक्सिको में ही इस विषय पर कचहरी के फैसले के लिए ठहरे हुए हैं?

यहाँ पर पौलुस जिस आशा को लेकर उत्साहित कर रहा है, वह आशा मनुष्य के द्वारा सच्चा न्याय उपलब्ध करने तैयार की गई प्रवासी नीति की सक्षमता में नहीं पाई जाती। बल्कि, पौलुस विश्वासियों का ध्यान एकमात्र परमेश्वर की ओर खींचता है जो उनके दुखों में सहभागी होता है, जिसकी गहरी समानुभूति को नजरबन्द कोठरियों से बाहर नहीं रखा जा सकता, जो हिंसा से बच कर भाग रहे शरणार्थियों की पीड़ा को जानता है, और जो यह जानता है कि जब एक बच्चा ऐसी परिस्थितियों में अपने माता पिता से बिछड़ जाता है तो किस तरह से हृदय पूरी तरह से टूट जाते हैं।

पौलुस के वचन अमरीका के विश्वासियों के हृदय में भी गूंजते हैं, जब वह हमें उस परमेश्वर का स्मरण दिलाता है जो सीमाओं को निरस्त कर देता है। यहाँ का विश्वास का समुदाय एक साथ इकट्ठा हो कर प्रार्थना करता है और इस आशा में कदम भी उठाता है कि परमेश्वर का प्रेम उन बाधाओं को समाप्त कर देगा जो हमें एक दूसरे से अलग करती हैं। जो लोग शरण देते हैं, जो लोग परिवर्तन के लिए निकल पड़ते हैं, और जो कचहरी में सुनवाई के लिए मित्रों का साथ देने का जाते हैं वे भी मानों आग पर अपने कदम रखते हैं।

जब हम एक साथ हैं, तो हम इस बात की परवाह नहीं करते कि अमरीका प्रवासी विभाग न्यायपूर्ण और निष्पक्ष होगा; यह न्यायपूर्ण नहीं होगा। हम जो कुछ करते हैं, हम अपने हृदयों और मनों और देह को खोल कर अपनी आशाओं को परमेश्वर पर उण्डेल देते हैं। चाहे उत्तर की ओर से या दक्षिण की ओर से, पूरब की ओर से या पश्चिम की ओर से, हमारा बढ़ाया हुआ प्रत्येक कदम एक प्रार्थना है।

कोस्टा रिका में 2019 में रिन्यूवल 2027 आयोजन में एक साथ मिलकर प्रार्थना। फोटो: ऐबेनेजर मोंडेज।

यह प्रार्थना कि हमारे बीच की कठोर सीमा परमेश्वर के प्रेम के भार में तड़क जाए। यह प्रार्थना कि निर्दयी हृदय और अन्यायपूर्ण तंत्र पिघल जाएं। यह प्रार्थना कि बन्धुएं मुक्त हो जाएं। परमेश्वर की उस शान्ति के लिए प्रार्थना जो सारी समझ से परे है और हमें एक दूसरे के साथ और परमेश्वर के साथ एक गहरी सहभागिता की ओर खींचती है।

प्रत्येक कदम एक प्रार्थना है।